भारत सरकार
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2218
09.12.2024 को उत्तर के लिए

ओडिशा के तटीय और नदी तटीय पारिस्थितिकी तंत्र में जैव-विविधता संरक्षण

2218. श्री अभिमन्यु सेठी :

क्या **पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री यह** बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने ओडिशा राज्य के तटीय और नदीय पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर जैव-विविधता के संरक्षण के लिए विशेषकर भद्रक और आस-पास के क्षेत्रों में स्थित दुर्लभ और संकटापन्न वनस्पतियों और जीव-जंतुओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कोई विशिष्ट योजनाएं या पहल की हैं;

(ख) स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं के साथ पारिस्थितिकीय संरक्षण को संतुलित करने पर ध्यान केन्द्रित करते हुए इन पारिस्थितिकीय प्रणालियों में जैव-विविधता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण पर्यावासों के संरक्षण और जीर्णोद्धार के लिए कार्यान्वित किए जा रहे उपायों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) इन जैव-विविधताओं संरक्षण प्रयासों विशेषकर ओडिशा के तटीय और नदी तटीय क्षेत्रों में विशिष्ट प्रजातियों के संरक्षण के संदर्भ में सफलता का आकलन करने के लिए प्रयुक्त किए गए मैट्रिक्स अथवा संकेतकों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)

(क) और (ख) भारत सरकार ने भद्रक और इसके आसपास के क्षेत्रों सहित ओडिशा राज्य के तटीय और नदी पारिस्थितिकी तंत्र के दायरे में आने वाली जैव विविधता के संरक्षण के लिए कई उपाय और पहल की हैं, जिनमें संधारणीय पर्यावास संबंधी राष्ट्रीय मिशन का कार्यान्वयन; राष्ट्रीय जल मिशन; हरित भारत मिशन; जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय योजना; अमृत धरोहर; जलाशयों की मरम्मत, नवीनीकरण और पुनरुद्धार के लिए जल संसाधन कार्यक्रम; नगर वन योजना; तटरेखा पर्यावास और मूर्त आय के लिए मैंग्रोव पहल; और प्रतिपूरक वनीकरण निधि प्रबंधन (सीएएमपीए) शामिल हैं।

भारत सरकार ने ओडिशा सरकार के सहयोग से एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन परियोजना (आईसीजेडएमपी) के हिस्से के रूप में मैंग्रोव के पुनर्स्थापन सहित कई महत्वपूर्ण उपाय किए हैं, जिसमें जैव विविधता की सुरक्षा और चक्रवातों के प्रभावों को कम करने के लिए भीतरकनिका और बैतरणी डेल्टा जैसे क्षेत्रों में की जा रहीं पुनर्वनीकरण गतिविधियां शामिल हैं।

इसके अलावा, भद्रक और इसके आसपास के क्षेत्रों की समग्र जैव विविधता के आकलन के लिए, जन जैव विविधता रजिस्टर तैयार किया गया है, जिसमें, अन्य बातों के साथ-साथ, कृषि भूमि, परती भूमि, दलदली भूमि, दलदल, नदी के किनारे के क्षेत्र, खाड़ियां, मुहाना, महासागर और तालाब तथा जैव विविधता की विस्तृत श्रृंखला के बारे में जानकारी उपलब्ध है।

भद्रक और इसके आसपास के क्षेत्रों से संबंधित तटीय और नदी पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण पर्यावासों की रक्षा और पुनर्स्थापना के लिए किए गए उपायों में वन क्षेत्रों में देशी और मिश्रित प्रजातियों के पौधे लगाना, वन सुरक्षा समितियों (वीएसएस) और पारिस्थितिकी विकास समितियों (ईडीसी) का गठन, विभिन्न प्रजातियों के पौधों का वितरण, जलाशयों का निर्माण, मैंग्रोव और कैसुरीना के बागान लगाना शामिल हैं।

(ग) ओडिशा के तटीय और नदी क्षेत्रों में जैव विविधता संरक्षण पहलों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए, विभिन्न आवश्यक 'मैट्रिक्स' और 'संकेतकों' का आमतौर पर उपयोग किया जाता है, जैसे कि प्रजातियों की विविधता और प्रचुरता के सर्वेक्षण सहित जैव विविधता समृद्धि का आकलन और उसका दस्तावेजीकरण। ये मीट्रिक प्रजातियों की आबादी के रुझान को शामिल करते हैं, विशेष रूप से विशिष्ट या संकटग्रस्त में पड़ी प्रजातियों जैसे कि ओलिव रिडले कछुए, इरावदी डॉल्फिन, एस्टुरीन मगरमच्छ और हॉर्सशू केकड़े पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो इन क्षेत्रों के प्रतीक माने जाते हैं।

इसके अलावा, ओडिशा सरकार के योजना और अभिसरण विभाग ने सभी विभागों के परामर्श से ओडिशा सतत विकास लक्ष्य संकेतक रूपरेखा (ओएसआईएफ) दस्तावेज तैयार किया है और राज्य में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की उपलब्धि की निगरानी के लिए संकेतक तैयार किए हैं। एसडीजी लक्ष्यों - जल के नीचे जीवन (एसडीजी 14) और भूमि पर जीवन (एसडीजी 15) की उपलब्धि का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले संकेतक जैव विविधता संरक्षण प्रयासों से सीधे संबंधित हैं। इन संकेतकों में अन्य बातों के साथ-साथ मैंग्रोव के अंतर्गत क्षेत्र में प्रतिशत परिवर्तन, समुद्री संरक्षित क्षेत्रों (एमपीए) में प्रतिशत परिवर्तन, कुल वन क्षेत्र में वन के बाहर वृक्षों का प्रतिशत, स्थानीय वन्यजीव प्रजातियों का संरक्षण शामिल हैं।

*****